# Kovida Shloka #1 - Raghuvamsham Sarga 2 - Shloka 1

## Links to the lecture and the class notes

1. Link to YouTube lecture on this shloka by Smt. Vidhya -<https://www.youtube.com/watch?v=4r6GQdLGxnc>
2. Link to the YouTube playlist for Smt. Vidhya Ramesh’s classes on the shlokas present in Kovida - <https://www.youtube.com/playlist?list=PLTWf5ZhGT361XPs_ZVFu6docp_PVxfRbF>
3. Link to the YouTube playlist for Smt. Vidhya Ramesh’s classes on all shlokas in Sarga 2 - <https://www.youtube.com/playlist?list=PLTWf5ZhGT362dCx4-a-wqb7f7B-Fj1SKU>
4. Link to the notes from Smt. Vidhya Ramesh’s classes on all shlokas in Sarga 2   
   - <https://nivedita2015.wordpress.com/sanskrit-sessions/video-kalidasas-raghuvamsham-second-sarga-vidhya-ramesh/>

## Class notes for this shloka

**1. श्लोकः**

मूलपाठः

**अथ प्रजानामधिपः प्रभाते जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्** **।**

**वनाय पीतप्रतिबद्धवत्सां यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच ।। २.१ ।।**

पदच्छेदः

अथ, प्रजानाम्, अधिपः, प्रभाते, जाया-प्रतिग्राहित-गन्ध-माल्याम्, वनाय, पीत-प्रतिबद्ध-वत्साम्, यशोधनः, धेनुम्, ऋषेः, मुमोच

अन्वयार्थः

* अथ = वसिष्ठगुरोः आश्रमे निशानयनानन्तरम्
* यशोधनः = कीर्तिमान्
* प्रजानाम् अधिपः = प्रजेश्वरः
* प्रभाते = प्रातःकाले
* जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम् = जायया (सुदक्षिणया) स्वीकारिते गन्धः माल्यं च यया, तां धेनुम् (सुदक्षिणा धेन्वा गन्धं माल्यं च प्रत्यग्राहयत् / स्व्यकारयत्)
* पीतप्रतिबद्धवत्साम् = पीतः (पीतवान्), प्रतिबद्धः वत्सः यस्याः ताम्
* ऋषेः धेनुम् = महर्षिवसिष्ठस्य गां नन्दिनीम्
* वनाय = वनं गन्तुम्
* मुमोच = मोचितवान्

अन्वयः

अथ यशोधनः प्रजानाम् अधिपः प्रभाते जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्यां पीतप्रतिबद्धवत्सां ऋषेः धेनुं वनाय मुमोच ।

आकाङ्क्षा

* मुमोच
  + किमर्थं / कस्मै मुमोच ? वनाय
  + कां मुमोच ? धेनुम्
    - कीदृशीं धेनुम् ? जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्
    - पुनः कीदृशीं धेनुम् ? पीतप्रतिबद्धवत्साम्
  + कदा मुमोच ? अथ
    - पुनः कदा मुमोच ? प्रभाते
  + कः मुमोच ? अधिपः
    - केषाम् अधिपः ? प्रजानाम्
    - कीदृशः अधिपः ? यशोधनः

तात्पर्यम्

पूर्वस्यां संध्यावेलायां वसिष्ठगुरुणा नन्दिनीधेनोः सेवाप्रकारविषये आज्ञप्तौ सुदक्षिणादिलीपौ रात्रौ आश्रमकुटीरे रात्रिम् अनयताम् । ततः प्रातःकाले सुदक्षिणा नन्दिन्यै गन्धं मालां च अर्पयित्या ताम् अपूजयत् । वत्से क्षीरं पीतवति दिलीपः तम् आश्रमपरिसरे बद्धवान् । ततः यशस्वी स नृपः तां धेनुं वनं प्रति नेतुं व्यमुञ्चत् ।

सन्धिः

* यशोधनो धेनुम् = यशोधनः + धेनुम, [https://niveditawordpress.com/sandhi/#ukaara](https://nivedita2015.wordpress.com/sandhi/#ukaara)
* ऋषेर्मुमोच = ऋषेः + मुमोच,

पदविवरणम्

* यशोधनः = यशः एव धनं यस्य सः
* प्रजाः = प्रकर्षेण जायन्ते इति
* अधिपः = अधि अधिकं पाति इति
* जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्
  + गन्धमाल्ये = गन्धः च माल्यं च [इतरेतर-द्वन्द्व-समासः]
  + जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम् = जायया प्रतिग्राहिते स्वीकारिते गन्धमाल्ये यया सा, ताम् [बहुव्रीहिः]
* पीतप्रतिबद्धवत्साम्
  + पीतः = पीतं पानं अस्य अस्ति इति पीतः । पीतवान् इत्यर्थः । अर्श आदिभ्योऽच् इति अच् प्रत्ययः ।
  + पीतप्रतिबद्धवत्साम् = (आदौ) पीतः (पश्चात्) प्रतिबद्धः वत्सः यस्याः सा, पीतप्रतिबद्धवत्सा ताम्
* मुमोच = मुच्“मुचॢँ मोक्षणे” / मुच्“मुचॢँ मोचने”, गणः तुदादिः, कर्तरि उभयपदी, अत्र परस्मैपदी, लिट्., प्र.पु., ए.व. ।
  + लट्लकारे – मुञ्चति, मुञ्चतः, मुचन्ति ।
  + लिट्लकारे – मुमोच, मुमुचतुः, मुमुचुः । मुमोचिथ, मुमुचथुः, मुमुच । मुमोच, मुमुचिव, मुमुचिम ।

अन्यविषयाः

* जायापदसामर्थ्यात् सुदक्षिणायाः पुत्रजननयोग्यत्वं अनुसंधेयम् ।
  + “आत्मा वै पुत्रः”।
  + पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वेह मातरम् ।
  + तस्यां पुनर्नवो भूत्वा दशमे मासि जायते ॥
  + तज्जाया जाया भवति यदस्यां जायते पुनः । इति ॥
* यशोधनः – यशः एव धनं यस्य ।
  + कीर्तिमान् सः दिलीपः ‘पुत्रवान् भवेयम्’ इति कीर्तिं प्राप्तुं राजानर्हे गोरक्षणे प्रवृत्तः ।

छन्दः

* वृत्तम् – उपजातिः (उपेन्द्रवज्रा १,३,४ – इन्द्रवज्रा २) – वृत्तद्वयमपि त्रिष्टुब्भेदान्तर्भूतम् ।
* उपेन्द्रवज्रा – जतजास्ततो गौ । जगण-तगण-जगण-गुरु-गुरु । ल गु ल – गु गु ल – ल गु ल – गु – गु । Note: The first letter – उ in उपेन्द्रवज्रा is laghu.
* इन्द्रवज्रा – स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौगः । तगण-तगण-जगण-गुरु-गुरु । गु गु ल – गु गु ल – ल गु ल – गु – गु । Note: The first letter इ in इन्द्रवज्रा is guru by the sutra १.४.११संयोगे गुरुbecause it precedes a conjunct letter (न्द्र इति संयुक्ताक्षरम्)। विस्तरेण ज्ञातुं अत्र [https://niveditawordpress.com/chandas-2/#upajaatih](https://nivedita2015.wordpress.com/chandas-2/#upajaatih) पश्यतु ।

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| **ल** | **गु** | **ल** | **गु** | **गु** | **ल** | **ल** | **गु** | **ल** | **गु** | **गु** |
| अ | थ | प्र | जा | ना | म | धि | पः | प्र | भा | ते |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| **गु** | **गु** | **ल** | **गु** | **गु** | **ल** | **ल** | **गु** | **ल** | **गु** | **गु** |
| जा | या | प्र | ति | ग्रा | हि | त | ग | न्ध | मा | ल्यां |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| **ल** | **गु** | **ल** | **गु** | **गु** | **ल** | **ल** | **गु** | **ल** | **गु** | **गु** |
| व | ना | य | पी | त | प्र | ति | ब | द्ध | व | त्सां |
| य | शो | ध | नो | धे | नु | मृ | षे | र्मु | मो | च |

Word-Meaning

* अथ = Afterwards (अथ)
  + प्रभाते = in the morning (प्रभात)
* प्रजानाम् अधिपः = The lord (अधिप) of the subjects (प्रजा)
  + यशोधनः = one for whom reputation (यशस्) is the supreme wealth (धन), i.e., one with good reputation
* मुमोच = released
  + ऋषेः धेनुम् = the cow (धेनुः) of Rishi (ऋषि) Vashista
    - जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम् = she who had accepted (प्रतिग्राहित) the fragrant paste (गन्ध) and flowers (माल्य) offered by his wife (जाया), Sudakshinaa, as part of her worship
    - पीतप्रतिबद्धवत्साम् = she whose calf (वत्स) has been tied (प्रतिबद्ध) to the post, after it had drunk (पीत) the milk
  + वनाय = to the forest (वन)